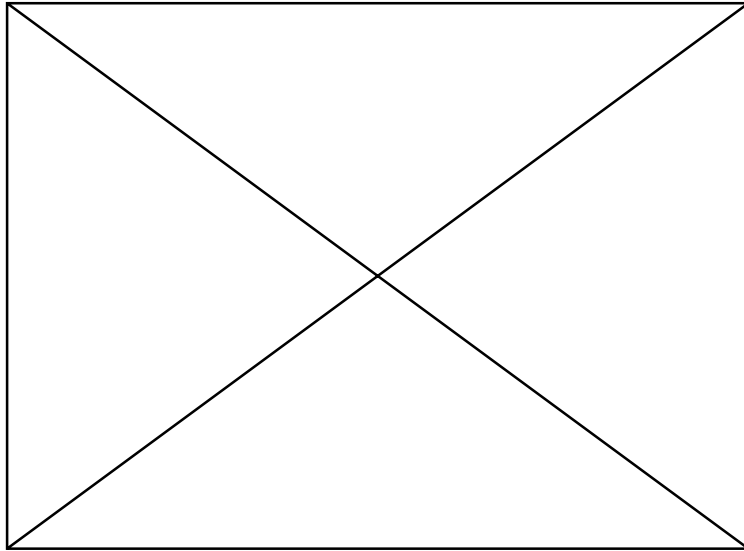


“जब आप किसी सत्ता, अथॉरिटी के पीछे चलते हैं तो आप अधिक से अधिक मंद, डल, होते जाते हैं, असंवेदनशील होते जाते हैं। और जब आप पूरी तरह आंतरिक, मनोवैज्ञानिक सत्ता को एक ओर हटा देते हैं, तब आप खोजबीन करने के लिए स्वतंत्र होना शुरू कर देते हैं। स्वतंत्र होना बेहद ज़रूरी है। पूर्ण, परम, आंतरिक स्वतंत्रता। तब स्वतंत्रता का अर्थ सिर्फ भय से, चिंता से और दुख से मुक्त होना नहीं, बल्कि खोजबीन करने के लिए स्वतंत्र होना होता है।”

-जे. कृष्णमूर्ति



जे. कृष्णमूर्ति परिसंवाद

वर्ष : 9 अंक : 1
सितम्बर 2014

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, वाराणसी की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका
सितंबर, दिसंबर, मार्च एवं जून में प्रकाशित

संपादक : चैतन्य नागर
सह संपादक : मुकेश गुप्ता

पृष्ठ संख्या

गहरे अर्थों में जीने के क्या मायने हैं?	5
क्या भविष्य है आपका?	18
के.एफ.आई. ग्रामीण केन्द्र	31

वार्षिक शुल्क : रु. 150.00
पांच वर्ष के लिए : रु. 600.00 दस वर्ष के लिए रु. 1000.00

बुढ़ को समझने
की ज़रूरत

1922 में जब कृष्णमूर्ति बर्कले यूनिवर्सिटी गये थे, तभी से उनके मन में भारत में शैक्षिक संस्थान शुरू करने की बात उठने लगी थी। 1969 और 1984 के बीच उन्होंने भारतीय विश्वविद्यालयों और भारत के आई.आई.टी. जैसे संस्थानों में वार्ताएं दीं और वहाँ के छात्रों और टीचर्स के साथ बातचीत भी की। हालांकि विश्व-विद्यालय शुरू करने का उनका स्वप्न पूरा तो नहीं हुआ पर उन्होंने भारत में पांच और यूरोप एवं अमेरिका में दो स्कूल ज़रूर शुरू किये। कृष्णमूर्ति उन चिंतकों और दार्शनिकों में थे जिन्होंने स्वयं औपचारिक शिक्षा नहीं ली और उस पर गंभीर सवाल भी खड़े किये। 15 फरवरी, 1933 को उन्होंने एक बड़ा ही दिलचस्प बयान दिया: “मैंने कभी कोई इम्तिहान पास नहीं किया। मैं तीन बार इम्तिहान में बैठा और आप तो जानते हैं कि क्या होता है परीक्षा हॉल में घुसते ही, सब कुछ जैसे अंधेरे में डूब जाता है। हो सकता है आपने ऐसा महसूस न किया हो, पर मैंने तो किया था। तो मैंने तीन बार कोशिश की और तीनों बार नाकामयाब होने में कामयाब रहा।”

कृष्णमूर्ति मौजूदा शिक्षा व्यवस्था को बहुत ही सीमित और अपर्याप्त मानते हैं, उसकी खामियों की बेहिचक आलोचना करते हैं, पर साथ ही एक विकल्प की ओर इशारा भी करते हैं। उन्हें एक

अनाकिस्ट नहीं कहा जा सकता। वे स्वतंत्रता के हिमायती हैं, पर साथ ही कहते हैं कि स्वतंत्रता का अर्थ तभी है जब साथ में अनुशासन और जिम्मेदारी का भाव भी बना रहे। फिलहाल शिक्षा एक पासपोर्ट भर है, समाज में सर्वाइव करने का, नौकरी पाने का, किसी पेशे में बने रहने का या कारोबार करने का। पर जीविका ही जीवन नहीं। जीवन में और भी बहुत कुछ है। दुख है, विषमताएं हैं, रिश्तों का दर्द है, सुख है, युद्ध हैं, भयंकर रूप में हिंसा का प्रहार है, और कुदरत की खूबसूरती है, साथ ही उसे बर्बाद करता इंसान का लालच और अहंकार है। कृष्णमूर्ति के अनुसार सबसे ज़रूरी है खुद को समझना, जिस पर आज की शिक्षा कोई स्पष्ट वक्तव्य नहीं देती। जहाँ सभी समाजशास्त्री और राजनीति के विशेषज्ञ किसी सामूहिक आंदोलन की, कलेक्टिव एक्शन की बात करते हैं, वहीं कृष्णमूर्ति यह मानते हैं कि मानवता का वास्तविक संकट व्यक्ति की विखंडित, विभाजित चेतना में है और उसका समाधान भी वहीं है। उनका मानना है कि यह काम प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर ही हो सकता है और इसलिए किसी नवीन विश्व व्यवस्था की शुरुआत के लिए उन्होंने शिक्षकों और युवा छात्रों को एक गंभीर जिम्मेदारी दी है। क्योंकि चेतना में मूलभूत परिवर्तन का काम जीवन के उसी दौर से शुरू किया जाना चाहिए।

परम्परागत शिक्षा हमारा नुकसान कर रही है, मन को बांधे दे रही है, और एक बिल्कुल नयी तरह की शिक्षा की ज़रूरत है—यह चुनौती उन्होंने लोगों के सामने रखी। उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे ‘सजगता के वैज्ञानिक’ बनें। बच्चों में संवेदनशीलता को जन्म दें। उन्होंने शिक्षक और छात्र, दोनों ही के लिए एक ऐसे अवलोकन की आवश्यकता पर बल दिया जिसमें पहले से एकत्रित ज्ञान बाधा न बने। स्कूल में शिक्षक और छात्र दोनों ही जीवन के बुनियादी सवालों की पड़ताल करें। यह पड़ताल बाहरी दुनिया से शुरू हो, और समझ के साथ-साथ वह अन्तरतम में प्रवेश करे। एक ऐसा माहौल बने जहाँ लोग सुनने और देखने की कला से परिचित हो सकें। जहाँ प्रज्ञा जाग सके, अच्छाई खिल सके।

‘परिसंवाद’ का यह अंक है कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के बारे में। इस अहम मुद्दे पर उन्होंने काफी कुछ कहा और लिखा और इस लिहाज से जो आपके सामने है, वह काफी कम है, पर एक तरह से शिक्षा से जुड़े हमारे पूर्वाग्रहों को जड़ से हिला डालने के लिए यह एक अच्छी खासी शुरुआत है।



गहरे अर्थों में
जीने के क्या
मायने हैं?

जीवन और अस्तित्व की चुनौतियों से जूझते हुए यदि आप किसी विश्वविद्यालय के छात्र होते तो क्या सवाल पूछते? मैं समझता हूँ कि यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि ऐसा जीवन कैसे जिया जाए जिसके गहरे अर्थ हों—एक ऐसा जीवन जो केवल घर, परिवार या ऐसी ही कुछ चीजों को हासिल करने के लिए ही न हो बल्कि यह खोजबीन करने के लिए भी हो कि सिर्फ जीने और अपने अस्तित्व को किसी तरह कायम रखने से भी अधिक गहरा कुछ है या नहीं। यदि मैं विद्यार्थी होता तो मैं ये दो सवाल जरूर पूछता— इस दुनिया में प्रज्ञाशीलता के साथ कैसे जिया जाए, एक ऐसा जीवन जिसमें खूब प्रसन्नता हो, खूबसूरती हो, गहरी समझ हो? और यह कैसे पता लगाया जाए कि क्या कुछ ऐसा भी है जो सतही खुशियों, मौजमस्ती वगैरह से भी अधिक गहरा है? मुझे लगता है कि मैं यही पूछता। क्या हम यहीं से शुरुआत करें?

यदि आप पढ़ाई पूरी करके विश्व-विद्यालय से बाहर आते और बहुत अधिक जटिल इस समाज का सामना करते तो आपकी चाह क्या होती? आप एक पूर्ण,

वैभवपूर्ण जीवन चाहते। एक ऐसा जीवन जो बिना किसी विरोधाभास के हो, मुक्त हो, बहुत ही सुंदर हो और आनन्द से भरा हो और मुझे पूरा यकीन है कि आप पूछते या फिर पता लगाने की कोशिश करते कि क्या कुछ ऐसा है जो इस सबसे भी अधिक गहरा है। यदि हम इन प्रश्नों से शुरुआत करें तो मैं आपका जवाब जानना चाहूंगा—चाहे आप युवा, वृद्ध या किसी भी पीढ़ी के हों।

पैदा होने से मरने के दिन तक हमारा एक-एक दिन विरोधाभास, दुख और संघर्ष से भरा हुआ बीतता है, युद्ध के साथ, जो लगातार भीतर और बाहर चल रहा है। हमारा जीवन है क्या—अस्वाभाविक, कुटिल और बनावटी, एक अस्तित्व जिसका अपने आप में कोई बहुत मतलब नहीं है लेकिन जिसको हम कुछ बौद्धिक व्याख्याओं के ज़रिये अर्थपूर्ण बनाने की कोशिश करते हैं। केवल जाती हुई पीढ़ी में ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए भी यह सब देखते हुए सवाल उठता कि क्या कुछ ऐसा है जो सोच की सीमा से परे है? इस समाज और संस्कृति की जटिल मशीनरी में फंसे बिना भी क्या कोई व्यक्ति बिलकुल सरल जीवन जी सकता है? यदि मैं विद्यार्थी होता तो मैं यही पूछता कि बिना किसी द्वंद्व के, पूर्णता व समृद्धि के साथ कैसे जिया जाए ताकि जीवन एक युद्ध का मैदान न बने। तब मैं पूछता कि क्या कुछ ऐसा है जो इस सबसे परे है? क्या कुछ ऐसा है जिसे आदमी ने हमेशा से खोजा है? कोई बताए यह नहीं, किसी सिद्धान्त की तरह नहीं, किन्हीं अनुमानित आदर्शों की तरह नहीं, बल्कि वास्तव में। अपनी दैनिक जीवन में मैं उसका वास्तव में पता लगाता और यह पता लगाना किसी विचार के तहत, किसी पलायन या किसी पुरस्कार के उद्देश्य से नहीं बल्कि वास्तव में होता। हम इस शाम इसी बारे में बात करने जा रहे हैं।

सबसे पहले, एक सरल जीवन से हमारा मतलब क्या है? सामान्यतया जो जवाब तत्काल दिया जाता है वह है—बहुत थोड़े सामान और एक या दो समय का भोजन यदि है तो आपका जीवन

सादा है। लेकिन यह तो सरलता का दिखावा भर है जबकि भीतर से आप उबल रहे हों, संघर्षरत हों, नाखुश हों, दुखी हों, अपनी अलग ही तरह की बेवकूफियों में फंसे हों, किसी खास संस्कार से ग्रस्त हों, और कामुकता या फिर और किसी भूख में लिप्त हों। यही वास्तविक अवस्था है—हम बाहर से सरल होकर जीना चाहते हैं लेकिन भीतर से हम बहुत ही जटिल हैं। तो फिर सरलता की शुरुआत कहां से हो? बाहर या भीतर? क्या कोई व्यक्ति, मनोवैज्ञानिक रूप से अपने भीतर की दुनिया में अतिशय सरलता से जी सकता है? क्योंकि यदि भीतर वह सरलता है तो फिर स्वाभाविक है कि बाहर भी वही सरलता होगी। आपके पास एक या फिर दस धोतियां हो सकती हैं। तब किसी व्यक्ति को यह दिखाना नहीं पड़ता कि वह सरलता से जीता है।

ऐसा जीवन जीने के लिए कोई क्या करे जिसमें पूर्ण स्वतंत्रता हो? कोई विरोधाभास न हो? क्या होना चाहिए, क्या हुआ है, और क्या होगा—इन सब मानसिक द्वंद्वों के बिना जीना कैसे हो? क्या यह संभव है? क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप में तो हम जो कुछ भी छूते हैं वहां भ्रम ही निर्मित करते हैं। हमारे रिश्तों में एक दूसरे के साथ द्वंद्व है, दुख है। अपने दैनिक जीवन में यह देखते हुए क्या ऐसा जीवन जीना संभव है जो बिना किसी विकृति के, बिना किसी विरोधाभास के हो और भीतर से बिलकुल साफ सुथरा हो? क्योंकि किसी भी प्रकार के विरोधाभास का मतलब है संघर्ष। क्या कोई ऐसा जीवन जी सकता है? और यह कैसे होता है? क्या हम इस बारे में बातचीत कर सकते हैं? क्या इसमें आपकी दिलचस्पी है?

देखिए, वक्ता तो इस बारे में बात कर सकता है लेकिन उसे सुनते हुए आपको भी इस बातचीत में हिस्सा लेना होगा। आपको केवल अपने कुछ विचारों और शब्दों के आदान-प्रदान की बजाय इसमें भाग लेना होगा। यह केवल एक व्यक्ति का मामला नहीं है बल्कि यह एक-दूसरे के साथ की जा रही खोजबीन है, एक सहयात्रा है, एक पारस्परिक अन्वेषण है। इसलिए यहां कोई सत्ता

नहीं है। हालांकि वक्ता मंच पर बैठा है लेकिन इससे उसे कोई अडि
कार नहीं मिल जाता। हम साथ-साथ यात्रा कर रहे हैं इसलिए हम
साथ-साथ सीख रहे हैं। साथ-साथ देख रहे हैं। साथ-साथ खोज
रहे हैं, एक दूसरे को सुन रहे हैं ताकि हम हर समय साथ-साथ
कदम से कदम मिलाकर चल सकें। न तो आप मुझसे आगे हैं और
न ही मैं आपसे। हम पता लगाने जा रहे हैं, खोजबीन करने जा
रहे हैं कि इतनी जटिल दुनिया में जीना कैसे मुमकिन हो पा रहा
है। और मनुष्य होने के नाते संस्कृति, समाज, अर्थव्यवस्था,
जलवायु, भोजन, परम्परा, तमाम तरह की बेवकूफियां और प्रवृत्तियां—
इस सबकी देन हम खुद हैं, ये सब कुछ हम ही तो हैं। क्या यह
सब कुछ दूर हटाया जा सकता है, ताकि हम वास्तव में मौलिक हो
सकें?

इसलिए इसमें जाने के लिए ज़रूरी है कि आप और मैं एक
साथ चलें, आपमें और मुझमें वही भाव हो, वही तीव्रता हो। यदि
आपमें उसे पता लगाने के लिए उत्कटता और भाव नहीं है तो आप
यात्रा नहीं कर सकते। तब आप एक द्रष्टा की तरह केवल जिज्ञासु,
और उत्सुक होकर भीतर देख रहे हैं, और आपमें पता लगाने का
वह भाव नहीं है। विज्ञान या फिर किसी भी क्षेत्र में पता लगाने के
लिए आपमें वह भाव, वह उत्कटता होनी ही चाहिए। यदि आपमें
यह नहीं है तो फिर इसे आप कैसे पैदा करने जा रहे हैं? खोजबीन
का यह असाधारण भाव आपको कोई दे नहीं सकता, कोई सिखा
नहीं सकता। इसकी कोई तरकीब, कोई फिलॉसफी, कोई विधि नहीं
है। जिस क्षण आपको इसका महत्त्व दिखाई पड़ता है उसी क्षण यह
भाव आपमें पैदा हो जाता है। जिस क्षण आप वास्तव में भूखे हों
उसी क्षण आप खाना खोज लेंगे, इसलिए इस तरह की अन्तर्यात्रा
के लिए आपके पास असाधारण ऊर्जा और भाव होना ही चाहिए।
और वह तब आता है जब आप इसका महत्त्व देखते हैं—और कुछ
नहीं। जब आप इसकी ज़रूरत, इसकी अत्यावश्यकता और इसका
महत्त्व देख लेते हैं तो आपमें यह पैदा होता है।

तो प्रश्न है—यह आपमें पहले क्यों नहीं आता? क्योंकि इस सबके बिना आप कोई यात्रा नहीं कर सकते। चाहे वह यात्रा वैज्ञानिक क्षेत्र में हो, आर्थिक क्षेत्र में हो या फिर आपकी अपनी गहराइयों की अंतर्यात्रा। इसलिए आपमें यह होना ही चाहिए। तो सवाल है कि उसमें लगातार खोजबीन की यह प्रेरणा कैसे बनी रहे? उसके लिए आपको ऊर्जा की आवश्यकता है। यह ऊर्जा कैसे आती है?

यदि आपसे यह पूछा जाए तो आप क्या कहेंगे? आप जानते हैं कि यहां आने, बैठने, सुनने, सोचने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता है। लेकिन यह ऊर्जा या तो समाज के द्वारा या फिर आपकी अपनी इच्छाओं व प्रवृत्तियों द्वारा विकृत कर दी जाती है या फिर इसे मुक्त होकर बहने दिया जाता है। इसे पूरी तरह मुक्त होकर बहने में कोई बाधा या रुकावट नहीं होनी चाहिए। पर हम बाधाओं और प्रतिरोधों से भरे हुए हैं। हमें यह करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए, ऐसे सोचना चाहिए, ऐसे नहीं सोचना चाहिए। हमारे अनगिनत सिद्धान्त हैं, आदर्श हैं, परम्पराएं हैं जो हमेशा हमें रोकते हैं। तो क्या कोई व्यक्ति इन बाधाओं, इन प्रतिरोधों के प्रति सजग हो सकता है और इन्हें देखते हुए इनसे मुक्त हो सकता है—और नये प्रतिरोध खड़े किये बिना?

अब हम उस प्रश्न पर आ गए हैं कि कोई अवलोकन कैसे करे? क्या आप जानते हैं प्रतिरोध से हमारा मतलब क्या है? एक राय प्रतिरोध हो सकती है। किसी चीज़ के बारे में आपकी कोई राय हो सकती है और उसी चीज़ के बारे में दूसरे की अलग राय। यहां हर आदमी एक दूसरे के खिलाफ प्रतिरोध खड़े करता है और इसलिए हम लगातार संघर्ष में जीवन जीते हैं। कृपया इसका अपने आप में अवलोकन करें। देखें कि आपके प्रतिरोध क्या हैं, आप कैसे प्रतिरोध पैदा करते हैं। और इस प्रतिरोध के प्रति सजग होते हुए इससे पूर्णतया मुक्त हो जाएं ताकि ऊर्जा स्वतंत्र रूप से बह सके। जिस क्षण आप ऊर्जा के प्रवाह को बाधित करते हैं, उसी क्षण निश्चित

रूप से द्वंद्व पैदा होता है। पहले तो हमें अपने अवरोधों के प्रति सजग होना होगा और फिर यह सीखना होगा कि इन्हें कैसे देखें ताकि और अधिक अवरोध पैदा हुए बिना ये अवरोध विदा हो जाएं।

यदि आपको कोई सूत्र पता है, आपका कोई निष्कर्ष है तो वही आपका प्रतिरोध है। यदि आप कहते हैं कि ईश्वर है या फिर ईश्वर नहीं है—तो यह एक प्रकार का प्रतिरोध है। आप वास्तव में नहीं जानते लेकिन आप ऐसे ही विश्वासों के साथ बड़े हुए हैं। इसलिए किसी भी तरह का निष्कर्ष या विश्वास एक तरह का प्रतिरोध ही है। यदि आपका यह विश्वास है कि आप एक हिन्दू हैं और मेरा यह विश्वास कि मैं मुसलमान हूँ तो स्वाभाविक रूप से यह विभाजन का एक प्रकार है। तो जहां भी विभाजन है वहां प्रतिरोध होगा ही और वह प्रतिरोध निश्चित रूप से ऊर्जा के समूचे प्रवाह को बाधित करता है, और फिर वहां द्वंद्व पैदा होता है। यह एक तथ्य है। आप इसे मानें या न मानें लेकिन यह एक तथ्य है। आपकी कोई अपनी परम्परा है, ऐसा कुछ जो बीते हुए समय द्वारा हमें सौंपा गया है और किसी दूसरे की कोई अपनी परम्परा है। ये दो परम्पराएं लोगों को बांटती हैं जो प्रतिरोध का ही एक प्रकार है। वहां विभाजन है और इसीलिए द्वंद्व है। मुझे लगता है कि यह इतना स्पष्ट है कि कोई इसे अपने आप में देख सकता है।

फिर यह जानते हुए कि आपके अपने मत, अपने निष्कर्ष और आपके अपने सूत्र दूसरों के विरोधी हैं, आप क्या करेंगे? आप इन सबको कैसे दूर करेंगे? क्योंकि यदि आप यह कहते हुए इनके विरुद्ध लड़ेंगे कि “मेरा कोई अपना सूत्र या निष्कर्ष नहीं होना चाहिए” तो आपका यह इनकार एक विपरीत का निर्माण करेगा और फिर वहां द्वंद्व होगा।

सर, देखें। मान लीजिए कि मेरा कोई अपना विश्वास है जो मेरे अपने अनुभव, ज्ञान, मेरी जानकारी, मेरी अपनी कुछ खास प्रवृत्तियों

पर आधारित है। और मैं इसके प्रति सजग होता हूँ। मैं क्या करूँगा? क्या मैं इसके साथ लड़ूँगा? यदि मैं यह करता हूँ तो फिर जो इसके साथ लड़ता है वह भी प्रतिरोध व निष्कर्ष का ही एक प्रकार होगा। ठीक? तो जब तक मैं खुद अपने और अपने प्रतिरोध के बीच विभाजन निर्मित करता हूँ तब तक द्वंद्व होगा ही। तो क्या मन इस प्रतिरोध को देख सकता है? किसी द्रष्टा की तरह नहीं, किसी बाहरी वस्तु की तरह इससे अपने को अलग करके नहीं?

जैसा कि हमने कहा कि जब तक द्रष्टा और दृश्य के बीच विभाजन है, और द्रष्टा यह कहता है—मुझे कोई प्रतिरोध नहीं करना है तो उसने पहले से ही प्रतिरोध का एक दूसरा ही स्वरूप तैयार कर लिया है। तो क्या मन बिना किसी मूल्यांकन, निन्दा, और जो कुछ भी वह देखता है उसको बदलने की चाह के बिना देख सकता है? पहले समस्या को देखें, फिर हम इसकी खोजबीन करेंगे।

देखना कैसे हो? यह 'कैसे' कोई विधि नहीं है। बिना किसी विभाजन, निष्कर्ष, पूर्व की परिकल्पना या पहले के अनुभव के कोई कैसे देखे? अवलोकन में ये सब विभाजन का कारण बनते हैं। मुझे बिना किसी तोड़-मरोड़ के, सीधे देखने का तरीका सीखना होगा। क्या यह संभव है? अपनी पत्नी को सीधे देखना, जिसका मतलब है कि उसके बारे में मेरी जो पहले की धारणा है उसके बिना देखना। मैंने उसके साथ अपने सुख, सेक्स, कहा-सुनी, डर, अडिाकार आदि अनुभवों पर आधारित एक प्रतिबिंब बना लिया है और उसी प्रतिबिंब से मैं उसे देखता हूँ। या फिर यह असली प्रश्न है कि बिना किसी तोड़-मरोड़ के देखना कैसे हो सके? ठीक? यदि यह बिलकुल स्पष्ट है तो हम पता लगा सकते हैं।

तो पहले हमें यह पता लगाना होगा कि वह मशीनरी क्या है जो इमेज का निर्माण करती है। साफ है कि हमारा अनुभव ही वह मशीनरी है। कृपया इसे थोड़ा और नज़दीक से देखें। मेरी पत्नी

कहती है, “तुम बेवकूफ हो।” यह एक चुनौती है और मैं इसका जवाब देता हूँ। चुनौती और प्रतिक्रिया से अनुभव आता है। अब क्या मन किसी दूसरे का कोई प्रिय या अप्रिय कथन इतनी पूर्णता के साथ सुन सकता है कि वह कोई छाप न छोड़े? क्या मन किसी कथन या किसी व्यक्ति को इतनी पूर्णता और इतने ध्यान से सुन सकता है कि उस चुनौती के प्रति आने वाला उत्तर पूरी तरह से उपयुक्त हो और इसलिए कोई द्वंद्व न हो, अतएव कोई अवशेष न रहे? तात्पर्य एक ऐसा जीवन जीने से है, जिसमें आपको हज़ारों अनुभव होते रहें—क्योंकि ये सब चेतन या अचेतन रूप से आपमें प्रवाहित होते ही रहते हैं—और तो भी आपका मन इमेज और फॉर्मूलों से टुँसा न हो।

क्या वक्ता अपने आप को स्पष्ट कर पा रहा है? क्योंकि हम साथ-साथ यात्रा कर रहे हैं, साझा कर रहे हैं, सीख रहे हैं, इसलिए यह सब आपका है, मेरा नहीं।

तो हम देखें कि कोई अनुभव बिंब, इमेज कैसे बनाता है। कोई आपके बारे में खुश करने वाली बात कहता है, आपकी चापलूसी करता है और आपको वह चापलूसी पसन्द आती है। यह चापलूसी अपनी एक छाप छोड़ती है और अगली बार जब आप उससे मिलते हैं तो वही छाप अपनी प्रतिक्रिया देती है; अब वह आपका मित्र है। कोई आपका अपमान करता है और जब आप अगली बार उससे मिलते हैं तो उसे इतनी सम्पूर्णता और इतने अवधान से सुनते हैं कि वह कोई निशान और कोई बिंब नहीं बनाता—क्या मन ऐसा कर सकता है? क्या मन हर क्षण यह कर सकता है? यह एक चुनौती है। आप समझे? मन पूरे समय यह काम नहीं कर सकता। वह अक्षम है। क्योंकि वह एक बड़ा तनाव होगा और इसमें बहुत अधिक सजगता की ज़रूरत है। लेकिन हमारा दिमाग ज्यादातर असजग होता है, और इस असजगता की हालत में जब कोई चुनौती आती है तो हम उसका जवाब बिना सजगता के देते हैं। हम खुद से कहते हैं कि मुझे पूरे समय सजग रहना चाहिए। हम

असजगता को सजगता में बदलना चाहते हैं जो कि 'जो है' को 'जो होना चाहिए' में बदलने की इच्छा है। और यह प्रतिरोध का ही एक रूप है। इसलिए असजगता के प्रति सजग होना ही सजगता है। असजगता की हालत को बिना बदलने की इच्छा के बस देखना, यह कहना नहीं कि 'असजगता को सजगता में परिवर्तित होना ही चाहिए'।

हमारे मन-मस्तिष्क लाखों तरह के सुख, दुख, डर आदि अनुभवों से भरे हुए हैं और उन्होंने अनगिनत बिंब, निष्कर्ष और मत-मतान्तर बना रखे हैं। अब क्या कोई इन सबको पूर्णता में देख सकता है? या फिर उसे एक-एक करके इन सबको देखना होगा? आप मुझसे सहमत या असहमत होने के पहले कृपया इस प्रश्न को समझें। इस मस्तिष्क ने लाखों वर्षों में अपने अनुभवों पर आधारित तमाम तरह की प्रतिक्रियाओं को इकट्ठा किया है। तो क्या इन प्रतिक्रियाओं को एक-एक करके विश्लेषित किया जाना चाहिए या कोई ऐसा भी रास्ता है जिससे इन सबको एक साथ तुरंत ही समझा जा सकता है?

विश्लेषण समय की मांग करता है। विश्लेषण में विश्लेषक और विश्लेषित वस्तु दोनों होते हैं और इसलिए वहां विभाजन है। और जब आप विश्लेषण करते हैं तो उस विश्लेषण को पूर्ण होना ही होगा क्योंकि यदि यह पूरा नहीं होता है, तो आप उस जानकारी का प्रयोग अगले विश्लेषण में करेंगे, और फिर एक विकृति को जन्म देंगे। और फिर तमाम तरह की प्रतिक्रियाओं, स्मृतियों, निष्कर्षों, डर, चिन्ताओं, आशाओं, और निराशाओं को एक-एक करके विश्लेषित करने में बहुत समय लगेगा और हो सकता है आप यह सब कर पाने में अक्षम हों। यदि आप यह कर पाने में सक्षम भी होते हैं तो यह एक क्रमिक प्रक्रिया होगी और इसमें समय लगेगा। फिर जब आप किसी एक के विश्लेषण में लगे होते हैं तो उसमें कुछ दूसरे कारक भी आ जाते हैं। इसे करने का केवल एक ही रास्ता हो सकता है और वह है—समूची विषय वस्तु का पूरा अवलोकन।

क्या मैं आपको यह स्पष्ट कर पाया? कि क्या मन प्रतिरोध, विभाजन, द्रष्टा और दृश्य, विश्लेषण की सत्यता या उसके झूठेपन— इन सबको एक साथ तुरंत ही देख सकता है?

आप बस देखें कि आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। जब आप कहते हैं, 'यह कठिन है', 'यह संभव नहीं है'—तो आप खुद को रोक रहे होते हैं। तो सहमत या असहमत होने की बजाय कुछ भी न कहते हुए केवल देखें...

प्रश्न : ईश्वर क्या है?

कृष्णमूर्ति : ओह! ईश्वर क्या है? यदि कोई बताए तो आप समझेंगे? क्योंकि वर्णन वह वस्तु नहीं है जिसका वर्णन किया जा रहा है। वर्णन तो बस वर्णन है। और फिर यह भी कि आप यह पूछ क्यों रहे हैं? क्या यह पता लगाने के लिए कि ईश्वर है या नहीं? इस बारे में वक्ता से समर्थन पाने के लिए? या फिर आप पता लगाना चाहते हैं? यदि आप वास्तव में जीवन की गहनता और उसके सौन्दर्य का पता लगाना चाहते हैं तो आपका मन आस्तिकता या नास्तिकता के किसी भी विचार से पूरी तरह मुक्त होना ही चाहिए अन्यथा आप उसे खोज नहीं सकते। यदि आप मुक्त नहीं हैं, यदि आप अपने ही विश्वासों के खूंटे से बंधे हैं तो कैसे आप पता लगाएंगे? एक ईश्वरपरस्त या ईश्वर को न मानने वाला दोनों ही अपने विचारों की गिरफ्त में है और ये दोनों ही कभी भी पता नहीं लगा सकते। तो फिर ईश्वर है या नहीं यह पूछने के पहले आपके पास अवलोकन करने की स्वतंत्रता तो होनी ही चाहिए। स्वतंत्रता, यानी सभी प्रकार की सत्ता, गुरुओं और किताबों से मुक्ति। आपको बिलकुल अकेले खड़े होना है। लेकिन हम कभी अकेले खड़े नहीं होते। हम अपने साथ दुनिया भर की किताबें और गुरुओं का ताम-झाम लिये चलते हैं। गुरु लोग आपको लेकर नहीं चलते, आप उन्हें लेकर चलते हैं और फिर ये गुरु ही आपका बोझ बन जाते हैं। इसलिए पता लगाने के लिए आज़ादी चाहिए ही।

जिसका मतलब है कि अब आपको कोई डर नहीं है। और आपका मन ऐसा होना चाहिए जो देखने में सक्षम हो। एक तुच्छ और संकीर्ण मन, एक मन जो अपने जीने और अपनी आकांक्षाओं को लेकर ही परेशान हो; यह ठीक है, वह ठीक नहीं है, मेरे पास यह सुख होना चाहिए, वह सुख मुझे नहीं चाहिए—इस तरह की चीजों में लगा हुआ मन ईश्वर की खोज कैसे कर सकता है? या फिर वह ईश्वर की बात भी कैसे करेगा? तो सर, इस प्रश्न को वास्तव में पूछने से पहले आपको वास्तविक मन से यह सवाल करना होगा क्योंकि केवल वास्तविकता ही आपको जवाब दे सकती है। किसी पुराने मन से यह काम नहीं होने वाला। आपको स्पष्ट होना होगा, बिना किसी भटकाव के। फिर आप कभी नहीं पूछेंगे कि ईश्वर क्या है।

प्रश्नकर्ता : (अस्पष्ट)

कृष्णमूर्ति : ओह! तो आप इस बारे में कुछ और अधिक जानना चाहते हैं कि वह अनुभव क्या है जो कोई निशान नहीं छोड़ता। यही प्रश्न है न सर? आप अतीत की खुशनुमा या कड़वी यादों से चिपके क्यों रहते हैं? क्यों? आप अतीत में जीते ही क्यों हैं? यदि आप अतीत में जिएंगे जैसा कि हम सभी करते हैं तो अनुभव भी उस अतीत का हिस्सा बन जाएगा। तो आपको पता लगाना होगा कि आप हमेशा अतीत में क्यों जीते हैं। आप ही बीता हुआ कल हैं। क्यों? इस प्रश्न को समझें, वक्ता के साथ इसमें प्रवेश करें। आप अतीत में जीते क्यों हैं? अतीत ही आपकी स्मृतियां हैं। वहां एक गहरी सुरक्षा है। है न? क्योंकि आने वाला कल अनिश्चित है। कल को कुछ भी हो सकता है। तो अतीत बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वहां परम्पराओं में, ज्ञान में, दूसरों ने जीवन के बारे में जो कहा है—इन सबमें एक सुरक्षा है। यह आपको एक गहरी सुरक्षा देता है। इस स्मृति के सहारे आप जीते हैं और इसी को आप जीना कहते हैं। जो कुछ भी आपकी इस स्मृति के विरोध में दिखता है उसे

आप स्वीकार नहीं करते और इस तरह आप एक लड़ाई में पड़ जाते हैं। एक तरफ तो आप सुरक्षा चाहते हैं, जो कि बीते हुए कल में रहना है, जबकि आप ही बीता हुआ कल हैं। लेकिन जिंदगी पास आती है और कहती है—‘बदलो, छोड़ो, आगे बढ़ो’, और आप डर जाते हैं। तो वहां डर है इसलिए आने वाले कल को लेकर आप भयभीत हैं।

तो स्मृति जो कि बीता हुआ कल है, वह दरअसल आपके जीवन में एक महत्वपूर्ण, बल्कि सबसे अहम भूमिका निभाती है। और आप कहते हैं कि मन या मस्तिष्क कैसे पूरी तरह बीते हुए कल को एक ओर हटा सकते हैं। बीता हुआ कल द्रष्टा है, द्रष्टा, जो कहता है—मैं तुमसे अलग हूं। आप अपने विचारों, अपनी समस्याओं, अपने दुखों के साथ हैं और मैं अपनी समस्याओं और अपने दुखों के साथ हूं। तो द्रष्टा बीता हुआ कल है और जब तक द्रष्टा दृश्य से अलग है वह स्मृतियां इकट्ठी करेगा ही और फिर इन्हीं स्मृतियों पर जिएगा। यही उसकी जमा पूंजी है, यही उसकी सुरक्षा है जो कि पूरी तरह असुरक्षित है। और इसलिए वहां डर है।

प्रश्न : (अस्पष्ट)

कृष्णमूर्ति : आपका प्रश्न है—‘आप समग्र को देखने की बात करते हैं। विचार कैसे समग्र को देख सकता है? क्योंकि बहुत सारे दूसरे भी विचार हैं तो फिर किसी एक को अलग कैसे करें कि वह दिखाई पड़े?’ प्रश्न यही है न? प्रश्न को देखें—कोई एक विचार किस तरह देखे जब बहुत सारे विचार आ-जा रहे हों? अब क्या आप किसी चीज़ को विचार के साथ देखते हैं? क्या आप अपने भाई या फिर सामने बैठे किसी व्यक्ति को विचार के साथ देखते हैं? क्या ऐसा है? यदि आप यह करते हैं तो आप विचार द्वारा निर्मित इमेज के द्वारा देखते हैं। इसलिए देखने का मतलब है बिना किसी विचार के देखना। जिसका यह मतलब नहीं है कि आप सनकी या ऐसा ही कुछ हो जाएं। विचार की पूरी प्रक्रिया, उसके प्रभाव और उसकी

दखलअंदाज़ी को जानते हुए इन सबके बिना देखें। इसे करें। एक बहुत ही साधारण चीज़ करें—एक पेड़ को देखें। अपने पिता, भाई, माँ, पति या पत्नी को देखें। विचार के हस्तक्षेप के बिना इन्हें देखें। फिर देखें कितनी असाधारण रूप से बारीक यह चीज़ है। यह न कहें कि मैं कर नहीं सकता। फिर तो काम ही खत्म, फिर आपने खुद को बन्द कर लिया। सीखें कि देखना कैसे हो। सीखें कि देखना क्या है। जब सीखना है तो वहाँ कोई विभाजन नहीं है।

वाय आर यू बीइंग एजुकेटेड
मुंबई विश्वविद्यालय में दूसरी वार्ता, 22 दिसंबर 1969
अनुवाद : अमित प्रताप सिंह



क्या भविष्य है
आपका?

दुनिया में क्या चल रहा है, आप जानते हैं भी या नहीं मुझे नहीं मालूम। भयंकर असंतोष है, बगावत है और कन्फ्यूज़न है। सिर्फ भौतिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि एक इंसान के तौर पर खुद के भीतर भी। और इस संकट से निपटने के लिए, इसी भ्रम और कन्फ्यूज़न के जरिये हम एक ऐसा जवाब चाहते हैं जो न सिर्फ हमें संतोष दे सके बल्कि वह स्थायी भी हो। यूरोप में, अमेरिका में और इस देश में भी इस तरह के पतन को साफ़ तौर पर देखा जा सकता है।

हर वर्ष सर्दियों में वक्ता कुछ महीनों के लिए यहां आता है। और वह करीब चालीस वर्षों से ऐसा करता आ रहा है। यहां आबादी का एक असाधारण विस्फोट, बढ़ती हुई गरीबी, और राजनैतिक अव्यवस्था देखी जा सकती है। जैसा कि बाकी देशों में है, यहां भी देखा जा सकता है कि धर्म पूरी तरह से विफल रहे हैं। पहले जो भी रहा हो, पर अब तो उनका बिलकुल भी कोई अर्थ ही नहीं रहा। विज्ञान ने भी मानव की समस्या का उत्तर नहीं दिया है, हालांकि ऐसे कई लोग हैं जिनका मानना है कि विज्ञान हमारे भ्रम को दूर कर देगा। शिक्षा ने तो

इंसान को और अधिक कन्प्यूज़न और युद्ध के लिए तैयार कर दिया है। मुझे उम्मीद है कि यदि मैं कहूँ कि शिक्षा भी नाकामयाब रही है, तो आपको यह बात अखरेगी नहीं।

चाहे जो भी हो, यह तो ज़रूरी है कि इंसान अवश्य ही शांति में रहे, ताकि वह साफ़-साफ़ सोच सके, सही ढंग से कार्य कर सके, सौंदर्य के साथ जी सके और एक नए संसार का निर्माण कर सके। प्रेम करने के लिए तो शांति की आवश्यकता है ही। ज़ाहिर है अभी यह सब मुमकिन नहीं हो पा रहा। न हमारे पास शांति है, न ही प्रेम है और हमारा पूरा जीवन जंग का मैदान बन गया है। जिस क्षण हम जन्म लेते हैं, तब से मृत्यु होने तक। पुराने, परंपरागत तौर-तरीकों का अब कोई अर्थ नहीं रह गया है। पहले जो भी रहा हो। तो यह है दुनिया की मौजूदा हालत। विज्ञान, धर्म और शिक्षा मनुष्य को इस तरह बदलने में असफल रहे हैं कि वह सौंदर्य के गहरे भाव के साथ खुश होकर रह सके, किसी रिश्ते में बगैर क्लेश के रह सके।

लेकिन अगर आप यह सब सिर्फ बौद्धिक रूप से ही देखेंगे, मन के एक हिस्से, या एक टुकड़े से होकर, तो ज़ाहिर है कि इसका जवाब भी टूटा हुआ, विखंडित ही होगा। बुद्धि भले ही जितनी कुशल हो, और वह बहुत ही कुशल है वह समस्या का हल नहीं कर पाती। भावनाएं और भावुकता भी नहीं। यह देखते हुए अब हम मुड़ते हैं तकनीकी दुनिया की ओर। तकनीकी विशेषज्ञ अब एक बहुत ही महत्वपूर्ण इंसान बन गया है। और हम यह कहते हैं कि वह हर चीज़ को सुनियोजित ढंग से करेगा, एक नयी दुनिया बना देगा, एक नया रिश्ता बना डालेगा वगैरह। पर तकनीकी विशेषज्ञ भी इस सवाल का जवाब नहीं दे पाएगा। मानव मस्तिष्क और हृदय बहुत ही जटिल हैं और सम्पूर्ण मानव अस्तित्व को एक टुकड़े, एक हिस्से के ज़रिये नहीं समझा जा सकता। तो फिर कोई क्या करे? हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, कम्युनिस्ट और समाजवादियों के रूप में नहीं, बल्कि एक इंसान की तरह हम क्या करें? दुनिया में वास्तव में जो कुछ हो रहा है, उसे जानते हुए हम क्या करें? भाषागत झगड़े,

राष्ट्रीय, राजनैतिक, धार्मिक विभाजन और जंग के लिए तैयार होती सेनाएं। और क्या हुआ कम्युनिज़्म का, जिसने कभी किसी असाधारण चीज़ का वादा किया था? वह नौकरशाहों की सत्ता एवं तानाशाही में तब्दील हो गयी, हालांकि वे 'प्रोलिटेरियन सरकार' जैसे बेतुके शब्दों का इस्तेमाल ज़रूर करते हैं जिससे वे अपने सिद्धांतों को सही ठहरा सकें।

तो फिर इस विचित्र स्थिति का कोई क्या करे? बगैर शब्दों के, बगैर बौद्धिक तरीके से, इसका वास्तव में सामना करते हुए, कोई क्या करे? यह कोई लफ़्फ़ाज़ी नहीं। इसका पता करने के लिए ज़ाहिर है हमें कुछ चीज़ों का अर्थ समझना पड़ेगा। जैसे कि 'कम्युनिकेशन', सम्प्रेषण क्या है? शब्दकोश के अनुसार इस शब्द का मतलब है 'साथ-साथ काम करना', 'साथ-साथ सृजन करना', ऐसा नहीं कि आप सम्प्रेषण, संवाद करने वाले की बात को बस सुनते रहें। सम्प्रेषण का सटीक अर्थ है साथ-साथ सोचना, अन्वेषण करना, पड़ताल करना और इसी में इस शब्द का सौंदर्य है।

ऐसा नहीं कि मंच पर बैठा वक्ता अपने विचार, सिद्धांत और नुस्खे सम्प्रेषित कर रहा है और आप बस सुने जा रहे हैं, सहमत या असहमत होते हुए। यह बड़ी अजीब बात है कि इस तरह के ऊंचे मंच पर बैठ कर एक ख़ास दर्ज़ा मिल जाता है, एक तरह की सत्ता। मेहरबानी करके उसे पूरी तरह एक तरफ हटा दें, क्योंकि जहां तक वक्ता का प्रश्न है, उसकी कोई सत्ता नहीं। वक्ता किसी तरह का सिद्धांत नहीं रख रहा आपके सामने और न ही किसी आदर्श या पद्धति का प्रचार कर रहा है। हम पता करने जा रहे हैं कि पूरी तरह कन्फ़्यूज़्ड, हिंसक, और क्रूर संसार में रहते हुए एक इंसान की हैसियत से हम क्या करें। एक ऐसे संसार में जो विखंडित है, जहां अत्याचार है, जहां नुस्खों और मतों को असाधारण महत्त्व दिया जाता है, जहां दार्शनिक सिद्धांत जीवन से ज़्यादा अहमियत रखते हैं। यह सब देखते हुए, कोई क्या करे, व्यक्ति के तौर पर नहीं, बल्कि मिल-जुल कर? व्यक्ति, 'इंडिविजुअल' शब्द का अर्थ है—अविभाजित, इंडिविज़िबल, जिसे बांटा नहीं जाना है, जिसे

बांटना, अलग करना, मुमकिन ही न हो। पर हम व्यक्तियों के रूप में टूटे हुए हैं, विखंडित हैं, और इसलिए हम व्यक्ति हैं ही नहीं।

तो हमारे जीवन के समूचे ढांचे में एक आमूल परिवर्तन कैसे आ सकता है? यही असली सवाल है—न कि और अधिक सिद्धांत, और अधिक आदर्श, या विचारधाराएं। हम अपने अस्तित्व के ही ढांचे में एक बदलाव, एक रूपान्तरण, एक पूर्ण क्रांति कैसे लाएं? धर्म तो विफल रहे हैं, उन्होंने इंसान को बदला नहीं है, बस बाहर से चमका भर दिया है। विज्ञान भी सफल नहीं हुआ है। न ही कोई सरकार, न पार्टी और न कोई दर्शन। लाखों वर्षों से वास्तव में, इन्सान को किसी चीज़ ने नहीं बदला। फ्रांस के दक्षिण के लेसो में पता नहीं आपने वो पेंटिंग्स देखी हैं या नहीं, जिनमें पच्चीस या तीस हजार साल पहले के इंसान को बुराई के खिलाफ संघर्ष करते दिखाया गया है। प्राचीन मिस्र में भी लोगों के सामने यही समस्या थी कि इंसान को कैसे बदला जाए, उसके मन को कैसे बदला जाए?

जब तक हमारे भीतर वास्तव में कोई क्रांति नहीं होती, तब तक हम युद्ध में ही जिएंगे, हिंसा, क्रूरता वगैरह के साथ। हमने जीने के इसी तरीके को स्वीकार कर लिया है। हमने युद्ध को स्वीकार कर लिया है: हथियारों से युद्ध, खुद के साथ युद्ध, और अपने पड़ोसी एवं समाज के साथ युद्ध। यह एक परम सत्य है। इसलिए हम यह पूछते हैं, बस शब्दों के ज़रिये नहीं, बल्कि पूरी गंभीरता से, एक प्रबल मांग के साथ। क्योंकि हमारे मन—आपका और वक्ता का मन—लाखों वर्षों का परिणाम हैं। यह मन आपका और मेरा नहीं। यह तो इंसान का मन है, जो लाखों वर्षों से यहां रहते आए हैं, और जिन्हें संस्कारों में बांधा गया है; जो एक खास ढर्रे में ठहर गये हैं और जो यातना, तकलीफ और दुख का जीवन जीते आये हैं। हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी के खिलाफ बगावत करती है, और आने वाली पीढ़ी को युद्ध, नफरत, विभाजन, क्रूरता, हिंसा और निराशा का एक अच्छा खासा कचरा सुपुर्द कर जाती है। आप अगर छात्र हैं तो आपका भविष्य क्या है? इम्तिहान पास करना, नौकरी पा लेना, शादी करना, पिछली पीढ़ी के बनाये हुए जाल में फंस जाना,

छोटा-मोटा घर बना लेना, पत्नी और बच्चों के साथ? और फिर झगड़ना, संघर्ष करना, और पूरी तरह से असन्तुष्ट, त्रस्त रहना? क्या यही होने जा रहा है? यह तो होना ही है, भले ही आप एक अच्छी तनखाह वाले टेक्नोक्रेट बन जाएं, अच्छी स्थिति में रहें और अपनी अहमियत के भाव से ही भरे रहें।

आप के पास डिग्री हो सकती है, आप असाधारण काम कर सकते हैं, चाँद तक पहुंचने में मदद कर सकते हैं, या समुद्र के भीतर एक महीने तक रह सकते हैं। तकनीकी दृष्टि से इन्सान ने असाधारण चीजों की हैं। पर एक इंसान के तौर पर हम हैं क्या? बहुत ही पुराने लोग जिस तरह से रहते थे वैसे ही हम रहते हैं। दुख के साथ, कन्प्यूज़न के साथ, जीवन और मृत्यु के भय के साथ, किसी सौंदर्य के बगैर, कभी भी खूबसूरत सूर्यास्त की ओर देखे बगैर; आसमान, पत्ती, आसमान के सामने खड़े पेड़ को देखे बिना। बस अपने छोटे-मोटे कामों में लगे हुए, आत्म-केंद्रित, एक छोटे से परिवार में अलग-थलग, लड़ते-झगड़ते हुए। बस यही तो हम जानते हैं।

हम आपको कुछ समझा-बुझा नहीं रहे, और न ही कोई प्रचार कर रहे हैं। हम तो बस 'जो है' उसकी तरफ इशारा कर रहे हैं और ज़ाहिर है कि हममें से अधिकांश के लिए 'जो है' उसे वास्तव में देखना बड़ा मुश्किल है। अभी हम यही करने की कोशिश कर रहे हैं। हम एक साथ कोशिश कर रहे हैं बिलकुल सटीक तरीके से उसे देखने की 'जो है'। 'जो है' उसे बदलने की कोशिश नहीं कर रहे। एक अच्छा वैज्ञानिक बिलकुल सटीक ढंग से 'जो है' उसे देखता है, उसका अवलोकन करता है, और 'जो है' वह अपनी कहानी खुद ही कह देता है। हम वास्तव में देखें कि क्या हो रहा है, वैज्ञानिक और आर्थिक स्तर पर नहीं, बल्कि इंसान के मन में, उसके दिल में, अपने रहने के तौर-तरीकों में। हम एक साथ इसे देख रहे हैं, बौद्धिक और शाब्दिक तौर पर नहीं, क्योंकि वर्णित वस्तु वर्णन से हमेशा अलग होती है। शब्द, वर्णन, व्याख्या—'जो है' नहीं हैं। शब्दों, व्याख्याओं, और वर्णन के प्रति बहुत ज़्यादा

संवेदनशील रहना होगा, उनसे सतर्क रहना होगा। और जब हम शब्दों से स्वतंत्र हो जाएंगे तो फिर हम देख सकते हैं, अपनी राष्ट्रीयताओं, अपने पूर्वाग्रहों, और इस तरह की तमाम बातों को, और फिर हम देख पाएंगे कि वास्तव में क्या हो रहा है।

अब 'जो है' उसे देखकर सवाल उठता है : हम क्या करें? इसका जवाब क्या आप एक वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ, व्यापारी, विद्वान या फिर एक दार्शनिक के तौर पर देंगे? इंसानी समस्या का उत्तर विखंडित रूप से देंगे? इसका प्रयास तो हम पहले कर चुके हैं। जीने की इस जटिल समस्या का, जो कि इंसान और इंसान के बीच का सम्बन्ध है, जो कि समाज है, हम टुकड़ों में, हिस्सों में जवाब देने का प्रयास कर चुके हैं। प्रयोगशाला के अंदर कोई बहुत बड़ा वैज्ञानिक भले ही हो, पर उसके बाहर वह एक बड़ा ही क्षुद्र जीव हो सकता है। एक धार्मिक इंसान भी उसे समझने की कोशिश में है जिसे वह सत्य समझता है, पर सत्य तो सिर्फ वही जान सकता है जिसका मन बहुत ही स्पष्ट हो, ऐसा मन जो मासूम हो, जिसने कभी यातना न झेली हो, कभी आंसू न बहाये हों। बस ऐसा ही कोई मन, वास्तविकता, सत्य को देख सकता है। ऐसा कुछ जो समय से परे हो। जो मन किसी दर्शन, किसी सिद्धांत, किसी विचारणा में फंसा हो, वह नहीं देख सकता।

जब चारों ओर और खुद के भीतर यह सब कुछ दिखता है, तो मानव मन को क्या करना चाहिए? आपको क्या करना चाहिए? युनिवर्सिटी से पढ़ाई खत्म करके बाहर जाने वाले छात्र को क्या करना चाहिए? एक टेक्नोक्रेट की तरह नहीं। नौकरी तो आप को मिल ही जायेगी। यह तो पक्की बात है। पर एक इंसान के तौर पर आप क्या करेंगे? आप खुद को कैसे बदलेंगे कि आप एक अलग तरह का जीवन जी सकें? एक ऐसा जीवन जिसमें कोई संघर्ष, कोई द्वंद्व न हो? मुझे नहीं लगता कि हम समझ पा रहे हैं कि यह सब कितना भयंकर रूप से गंभीर मसला है। तो क्या यह संभव है कि एक बुनियादी क्रांति लायी जा सके? और वही बस एक क्रांति है— मनोवैज्ञानिक क्रांति एकमात्र क्रांति है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक

क्रांति नहीं, बल्कि आंतरिक क्रांति, मनोवैज्ञानिक रूपांतरण, ताकि हम शांति से रह सकें, एक विचार के रूप में नहीं, बल्कि वास्तव में, अपने रोज़मर्रा के जीवन में। इसे समझने के लिए यह पूछना पड़ेगा कि मन में इतना विखंडन क्यों है। आप एक व्यवसायी हैं, पर घर पर आप कुछ और ही हैं। इसी तरह की और बातें। तो विरोधाभास है। इस अद्भुत जीवन को, उसके सौंदर्य और असाधारण गति को हमने क्यों तोड़ डाला है? क्यों इसका विखंडन कर डाला है? मैं सोचता हूँ कि मन के विखंडन में ही इसका जवाब छिपा है। इस चुनौती का उत्तर छिपा है। चुनौती यह है कि आप लाखों सालों से द्वंद्व में हैं, दुख में हैं, भय में हैं, और चुनौती कहती है कि आपको बदलना ही चाहिए। यह दुनिया की मांग है, मौजूदा संकट का तकाज़ा है। हम साथ मिलकर यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि मानव मन क्यों इतना अधिक संस्कारों से बंधा है, टूटा हुआ क्यों है, अपने आप में क्यों विखंडित है। यदि हम इसका जवाब दे पाएं, बौद्धिक और शाब्दिक रूप में नहीं, पर अपने दिल में, खुद के बहुत भीतर कहीं, तब हम देखेंगे कि हम बिलकुल अलग ढंग का एक जीवन जी पा रहे हैं। एक बिलकुल पूरी तरह के अलग आयाम में। और आज शाम हम यही पता करने जा रहे हैं। यह समझना ज़रूरी है कि हम 'साथ-साथ' हैं, क्योंकि वक्ता ज़रा भी महत्त्वपूर्ण नहीं। वक्ता के पास ऐसा कोई अधिकार नहीं कि वह आपसे यह या वह करने के लिए कहे। हम एक यात्रा पर निकले हैं, पड़ताल करते, ढूँढते, पूछते, देखते हुए।

पहला सवाल है: मन में इतना विभाजन, इतना विरोधाभास, इतना भय क्यों है? (मन, हृदय, मस्तिष्क, और भौतिक देह, ये सभी एक ही हैं, मनोभौतिक इकाई। यह कोई उच्चतर आत्म नहीं, आत्मा जैसा कुछ नहीं या निम्नतर 'मैं' और इसी तरह की तमाम चीज़ें जिनका किसी ने आविष्कार किया है वह भी नहीं।)

जब आप से ऐसा कोई सवाल पूछा जाता है, तो कोई बाहर से उसका जवाब देने वाला नहीं होता, कोई सत्ता, कोई पुस्तक, कोई गुरु, कोई प्रोफेसर, कोई नहीं होता। पर आपको पूछना होगा यह

सवाल। आपको इसका जवाब खुद से, अपने लिए ही देना होगा। पहली चीज़ समझने के लिए यही है। जीवन में कोई नहीं जो आपको बताएगा कि आपको क्या करना चाहिए। गुरुओं ने, शिक्षकों ने, दार्शनिकों ने, किताबों ने, विश्लेषकों ने—सभी ने आपको बताया है कि आपको क्या करना चाहिए। इस तरह लाखों वर्षों तक हम सेकंड हैंड, दूसरों की बातों को उधार लेकर जीने वाले इंसान रहे हैं। दूसरों ने जो कहा है आप उसे बड़ी खूबसूरती से दोहरा सकते हैं, बड़े शानदार तरीके से, बारीकी के साथ उसकी व्याख्या कर सकते हैं, पर गहराई में, बुनियादी रूप से हम सेकंड हैंड हैं, या थर्ड हैंड भी। तो फिर ऐसा कोई नहीं जिसके पीछे आप चल सकें। यह उन चीज़ों में है जिसे आपको समझना ही होगा। एक इंसान के तौर पर आपको किसी को भी यह इजाज़त नहीं देनी चाहिए कि वह आपका नेतृत्व करे। चाहे वह कम्युनिस्ट हो, मार्क्सवादी, दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक या गुरु। यह सब हम कर चुके हैं। लोगों के पीछे चल-चल कर हमने इस दुनिया का कचरा बना डाला है।

मुझे नहीं लगता कि हमें इस बात की गंभीरता का एहसास है। जब आप किसी सत्ता, अर्थोरिटी के पीछे चलते हैं तो आप अधिक से अधिक मंद, 'डल', होते जाते हैं, असंवेदनशील होते जाते हैं। और जब आप पूरी तरह आंतरिक, मनोवैज्ञानिक सत्ता को एक ओर हटा देते हैं, तब आप खोजबीन करने के लिए स्वतंत्र होना शुरू कर देते हैं। स्वतंत्र होना बेहद ज़रूरी है। पूर्ण, परम, आंतरिक स्वतंत्रता। तब स्वतंत्रता का अर्थ सिर्फ भय से, चिंता से और दुख से मुक्त होना नहीं, बल्कि खोजबीन करने के लिए स्वतंत्र होना होता है, ताकि आप गंभीरता से, गहराई से खुद के भीतर जा सकें। आपके पास जो कुछ है, वह यही है। आप इस समाज और संस्कृति का ही नतीज़ा हैं। बस यही है आपके पास। आपको इसकी पड़ताल करनी होगी, जांच करनी होगी और देखना होगा कि आप इन सब से पूरी तरह मुक्त हो सकते हैं या नहीं। जिसका अर्थ है खुद को संस्कारबद्धता से पूरी तरह मुक्त कर लेना। यह मत कहिये कि मानव मन के लिए खुद को संस्कारबद्धता से मुक्त करना संभव नहीं। जैसे ही आप यह कहेंगे कि संभव है या नहीं, आपने तुरंत

खुद को बांध लिया, खोजबीन करने से खुद को रोक लिया। इसीलिए अब आपको असंभव प्रश्न पूछना होगा, और असंभव प्रश्न है—क्या मन को पूरी तरह, पूर्ण रूप से संस्कारबद्धता से मुक्त किया जा सकता है? सिर्फ तभी कोई बिल्कुल अलग तरह का जीवन जी सकता है।

इसलिए मनोवैज्ञानिक और आंतरिक तौर पर समस्त अर्थोरिटी को एक ओर कर दें। पुलिस वगैरह के अधिकार तो बने ही रहेंगे, क्योंकि हम एक पागल, क्रूर संसार में रह जो रहे हैं। हम बात कर रहे हैं गहरी, आंतरिक स्वतंत्रता की। स्वतंत्रता विपरीत नहीं गुलामी का। यह 'जो है' उसका विपरीत भी नहीं, और उससे पलायन भी नहीं। हालांकि यह काफी मुश्किल काम है, पर जब आप समस्त सत्ता, अर्थोरिटी को एक ओर कर देते हैं, सिर्फ दूसरों की ही नहीं, बल्कि अपने ज्ञान और अनुभव की सत्ता को भी, बस तभी आप पूछ सकते हैं: यह मन जो एक अद्भुत चीज़ है और बड़े शानदार काम कर सकता है, यह खुद को बदल क्यों नहीं सकता? मस्तिष्क में हज़ारों वर्षों की स्मृतियों के अवशेष टुंसे हुए हैं, और इसने दुनिया को विभाजित कर रखा है। मस्तिष्क में विचार पैदा होते हैं, विचार स्मृति का प्रत्युत्तर है, और स्मृति है अनुभव, ज्ञान, अतीत। यह विचार क्यों अपने ही जीने की जटिल, पेचीदा समस्या को हल नहीं कर पा रहा?

कितनी ख़ूबसूरत शाम है आज! है न? दूज के चाँद को देखिये! सर, आप कभी नहीं देखते दूज के चाँद को, आप के पास वक्त ही नहीं इसे देखने का, इसके सौंदर्य, इसकी ताज़गी, इसके भोलेपन को निहारने का। आप तो बस उलझे हुए हैं अपनी ही समस्याओं में, अपने अरमानों में और आप पूजा करते हैं सफलता नाम की एक भयानक चीज़ की। फिर चाँद के वहां होते हुए भी आप नहीं देखते उसे। इसलिए आपके जीवन में भी सौंदर्य नहीं आता। कभी नहीं आता। आप शानदार इमारतें बनाते हैं, पर किसी ख़ूबसूरत चीज़ को देखने का वक्त ही नहीं आपके पास। आप म्यूज़ियम में जाते हैं, क्योंकि कुदरत के साथ आपका रिश्ता ख़त्म हो गया है। और

कुदरत कहती है: पेड़ के सौंदर्य को देखो। डूबते सूरज या किसी खुली जगह खड़े अकेले दरख्त को देखो, पर्वत के वैभव को देखो, किसी स्त्री या पुरुष के सुन्दर चेहरे को देखो।

मस्तिष्क क्यों नहीं बदल पा रहा खुद को? कृपया यह पूछें खुद से। अपने दिल से—क्षुद्र, छोटे मन से नहीं। और आप जब पूछेंगे तो देखेंगे कि जवाब विचार से आ रहा है, और उसका जवाब हमेशा पुराना होता है। विचार कभी भी नया नहीं होता, विचार कभी भी मुक्त नहीं होता, इसलिए इसका उत्तर भी नया नहीं होता। जब इस तरह का एक गंभीर सवाल आता है, तो विचार लपक कर जवाब देता है, और इसके जवाब से लोग संतुष्ट होते हुए दिखते भी हैं।...

विचार समय है, विचार दुख है, विचार भय है। विचार हमेशा विभाजित करता है, विरोधाभास में रहता है, एक दिशा या एक कामना के विपरीत दूसरी दिशा में खींचता है। तो क्या मस्तिष्क बिलकुल नए और ताज़े ढंग से जवाब दे सकता है, बावजूद इसके कि वह लाखों वर्षों के अनुभवों से गुज़रा है, और पूरी तरह संस्कारबद्ध हो चुका है? क्या ऐसा हो सकता है कि वह मस्तिष्क विचार के ज़रिये तत्क्षण जवाब न दे? इसका मतलब है कि क्या मस्तिष्क शांत रह सकता है—निष्कर्षों के बिना, मत्तों, फैसलों, आकलनों के बगैर? ये सब अतीत पर आधारित हैं। संस्कारों से बुरी तरह बंधा हुआ मन क्या विचार के ज़रिये जवाब देना बंद कर सकता है? इसका अर्थ यह है कि सवाल रखे जाने पर, चुनौती के आने पर क्या मस्तिष्क की कोशिकाएं पूरी तरह शांत रह सकती हैं? यहीं ध्यान की बात आती है। ध्यान का सौंदर्य यहीं है। किसी अभ्यास, किसी पद्धति वगैरह को न मान लेना, बल्कि ऐसे मस्तिष्क का होना जो असाधारण रूप से जीवंत हो और शांत भी, जिससे यह किसी भी चुनौती का तीव्रता के साथ जवाब दे सके। यदि प्रत्युत्तर, जवाब, चुनौती के हिसाब से पर्याप्त न रहा तो विरोधाभास पैदा होगा। आप अगर अतीत के आधार पर जवाब देंगे तो ज़रूर विभाजन पैदा होगा और द्वंद्व भी, साथ ही ऊर्जा भी नष्ट होगी।

इस तरह विचार अलगाव पैदा करता है। विचार द्रष्टा की रचना करता है। द्रष्टा अतीत है। जब यह द्रष्टा अवलोकन करता है तो वह खुद को द्रष्टा और देखी गई चीज़ में बांट लेता है। और तब सारे द्वंद्व, झगड़े की शुरूआत होती है, आपके और आपकी पत्नी के बीच, आपके और आपके पड़ोसी, आपके बच्चों और आपके समुदाय आदि के बीच। जहां झगड़ा-संघर्ष है वहां प्रेम हो ही नहीं सकता; आप यौन सुख का या किसी और सुख का अनुभव तो कर सकते हैं पर वह प्रेम नहीं है। क्या प्रेम उत्तेजना है? क्या प्रेम कामना है? क्या प्रेम पीड़ा है?

एक स्तर पर विचार का असाधारण महत्त्व है। तकनीकी क्षेत्र में, शाब्दिक सम्प्रेषण में। तर्कसंगत, वस्तुपरक ढंग से और भावुकता में बहे बगैर सोचना ज़रूरी है। मतों और धूर्त नुस्खों के बगैर सोचना ज़रूरी है। पर यह भी देखें कि जब जीने की असाधारण चुनौती सामने आती है, तो विचार का शांत रहना ज़रूरी है। आप जानते हैं, प्रेम अकेली ऐसी चीज़ है जो शांत है। आप किसी का हाथ थाम सकते हैं, मुस्कुरा सकते हैं, कुछ संकेत कर सकते हैं, पर आप गौर से देखें तो प्रेम अकेली ऐसी चीज़ है जो पूरी तरह शांत है। और इसीलिए जब प्रेम किसी चुनौती का जवाब देता है तो वह पर्याप्त होता है, उसमें कोई द्वंद्व नहीं होता। वैसा मन ही धार्मिक मन होता है। ऐसे मन को मंदिर, मस्जिद या चर्च जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। ऐसा मन जानता है, सजग रहता है। सत्य एक ऐसी असाधारण अवस्था है जो समयातीत है, अपरिमेय है, परम है— आप चाहे जो नाम दे लें इसे।...

वाय आर यू बीइंग एजुकेटेड
आई.आई.टी. मद्रास में 9 जनवरी, 1970 को दी गई वार्ता
अनुवाद : चैतन्य नागर



कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया का वार्षिक सम्मेलन- के.एफ.आई. पब्लिक गैदरिंग- 20&23 नवंबर 2014

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया का वार्षिक सम्मेलन- के.एफ.आई. पब्लिक गैदरिंग- इस साल सह्याद्री स्कूल, पुणे में 20 से 23 नवंबर के बीच आयोजित होगा। गैदरिंग की थीम है: Freedom and the First Step. गैदरिंग में भाग लेने एवं विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

सह्याद्री स्टडी सेंटर, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया,
तिवई हिल्स, राजगुरु नगर (खेड), पुणे 410513

फोन : 02135-306192, 288442

Email: kfishahyadri.study@gmail.com, sahyadrischool@gmail.com

Website: <http://kscskfi.com>

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, वाराणसी द्वारा 3 से 5 अक्टूबर, 2014 के बीच हिंदी वार्षिक शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का केंद्रीय विषय है: आधुनिक समाज की चुनौतियां: शिक्षा एवं व्यक्ति की भूमिका। इस शिविर का उद्देश्य उन सभी लोगों को एक साथ लाना है जो शिक्षा के मूलभूत प्रश्नों के अन्वेषण में दिलचस्पी रखते हैं। शिविर के दौरान इन विषयों से जुड़ी वार्ताएं होंगी, पारस्परिक संवाद होंगे एवं जे. कृष्णमूर्ति की वार्ताओं के वीडियो भी दिखाए जाएंगे। शिविर का आरंभ 3 अक्टूबर को सुबह 10 बजे से होगा तथा समापन 5 अक्टूबर की शाम 4 बजे होगा। सहभागी 2 अक्टूबर की शाम तक अथवा 3 अक्टूबर को सुबह 8 बजे तक राजघाट पहुंच सकते हैं। शिविर में भाग लेने के लिए आप अपना आवेदन इस पते पर भेज सकते हैं :

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, वाराणसी द्वारा 3 से 5 अक्टूबर, 2014 के बीच हिंदी वार्षिक शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का केंद्रीय विषय है: आधुनिक समाज की चुनौतियां: शिक्षा एवं व्यक्ति की भूमिका। इस शिविर का उद्देश्य उन सभी लोगों को एक साथ लाना है जो शिक्षा के मूलभूत प्रश्नों के अन्वेषण में दिलचस्पी रखते हैं। शिविर के दौरान इन विषयों से जुड़ी वार्ताएं होंगी, पारस्परिक संवाद होंगे एवं जे. कृष्णमूर्ति की वार्ताओं के वीडियो भी दिखाए जाएंगे। शिविर का आरंभ 3 अक्टूबर को सुबह 10 बजे से होगा तथा समापन 5 अक्टूबर की शाम 4 बजे होगा। सहभागी 2 अक्टूबर की शाम तक अथवा 3 अक्टूबर को सुबह 8 बजे तक राजघाट पहुंच सकते हैं। शिविर में भाग लेने के लिए आप अपना आवेदन इस पते पर भेज सकते हैं :

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001

फोन : 0542-2441289

ईमेल : kcentrevns@gmail.com

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, वाराणसी में 6 से 9 नवंबर, 2014 के बीच एक स्टडी रिट्रीट/अध्ययन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अध्ययन शिविर की थीम है: The art of learning about oneself. रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क करें :

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, वाराणसी में 6 से 9 नवंबर, 2014 के बीच एक स्टडी रिट्रीट/अध्ययन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अध्ययन शिविर की थीम है: The art of learning about oneself. रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क करें :

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001

ईमेल : kcentrevns@gmail.com

D; k vki 'Lo; a l s l okn* fu; fer : i l s eakuk pkgrs gk

जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं को हिंदी जनमानस में व्यापक रूप से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'स्वयं से संवाद' का प्रकाशन किया जा रहा है। आप इसकी सदस्यता निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप भविष्य में इसे नियमित रूप से प्राप्त करना चाहते हैं तो कृपया हमें पत्र या ईमेल के ज़रिये सूचित अवश्य करें :

संपादक, 'स्वयं से संवाद', कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर,
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 ईमेल : kcentrevns@gmail.com

jkt?kkV : jy l wj eafunskd dh vko' ; drk

राजघाट एजुकेशन सेंटर, वाराणसी के रूरल सेंटर में निदेशक पद के लिए आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं। करीब 200 एकड़ में फैले इस ग्रामीण केंद्र में कक्षा आठ तक का एक विद्यालय है, एक चैरिटेबल अस्पताल है, एक डेयरी फार्म, कृषि फार्म, और एक महिला सशक्तीकरण इकाई है। इनमें से किसी भी क्षेत्र में अनुभव एवं विशेषज्ञता रखने वाले इच्छुक व्यक्ति अपना आवेदन, बायोडाटा के साथ, इस पते पर भेज सकते हैं:

डायेक्टर, राजघाट एजुकेशन सेंटर
के.एफ.आई., राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001
ईमेल : sndubeyrecvaranasi@gmail.com
वेबसाइट : www.j-krishnamurti.org

कॉपीराइट सूचना

जे. कृष्णमूर्ति के उद्धरण अंतर्राष्ट्रीय कॉपीराइट नियम के अंतर्गत संरक्षित हैं तथा सर्वाधिकारी की लिखित पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रस्तुत नहीं किये जा सकते हैं। सन् 1968 के पूर्व की कृष्णमूर्ति की रचनाओं का कॉपीराइट कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ऑफ अमेरिका, ओहायो, कैलीफोर्निया का है। सन् 1968 के बाद की रचनाओं का कॉपीराइट कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ट्रस्ट, ब्रॉकवुड पार्क, इंग्लैंड का है।

राजघाट शिक्षण संस्थान का ग्रामीण केंद्र

गंगा और वरुणा नदियों के संगम पर स्थित लगभग 200 एकड़ का ग्रामीण केंद्र ('रूरल सेंटर') पंचक्रोशी परिक्रमा करने वाले तीर्थयात्रियों के मुख्य मार्ग तक फैला हुआ है। ऐसा कहा जाता है कि करीब ढाई हजार साल पहले गौतम बुद्ध इसी भूमि से होकर अपना पहला प्रवचन देने सारनाथ पहुंचे थे। इसके पश्चिमी ओर वरुणा नदी है; दक्षिणी तरफ गंगा की अविरल धारा है। केंद्र की निम्नलिखित इकाइयां हैं:-

1. ग्रामीण परिवेश के गरीब परिवारों के 272 बच्चों के लिए स्थापित अच्युत पटवर्धन जूनियर हाई स्कूल पिछले कई दशकों से पढ़ाई के साथ-साथ बुनकारी, हस्तशिल्प, कम्प्यूटर, खेलकूद, अध्ययन परिभ्रमण, संगीत, स्वास्थ्य व पर्यावरणीय मुद्दों की शिक्षा दे रहा है।
2. महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम के तहत बालिका समग्र कल्याण केंद्र (जी-कार्ड) और 'सुई-धागा' इकाइयों का संचालन किया जा रहा है, जिसमें महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण देकर उनको आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है।
3. ग्रामीण केंद्र में स्थित संजीवन अस्पताल प्रतिवर्ष तीस हजार से अधिक रोगियों की स्वास्थ्य रक्षा करता है। लगभग सात किलोमीटर के दायरे में यह इकलौता अस्पताल है जो गरीबों व हाशिए के लोगों का नाममात्र के पंजीयन शुल्क पर इलाज करता है। दवाएं निःशुल्क दी जाती हैं। यहां बारह बिस्तरों का एक वॉर्ड, पैथोलॉजी और एक्स-रे सुविधा उपलब्ध है।
4. लगभग अस्सी एकड़ का एक कृषि फार्म है। फार्म में ऑर्गेनिक खेती भी की जाती है तथा सब्जियां एवं अनाज का ग्रामीण समुदाय के पुरुषों एवं स्त्रियों को जीविका उपलब्ध होती है।
5. ग्रामीण केंद्र में एक डेयरी फार्म है जिसमें लगभग 65 गायें हैं। यहां के दूध का उपयोग यहां के ग्रामीण एवं आवासीय विद्यालयों के छात्रों तथा यहां कार्यरत लोगों के लिए किया जाता है।

जे. कृष्णमूर्ति की हिंदी में उपलब्ध कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

ज्ञात से मुक्ति
प्रथम और अंतिम मुक्ति
हिंसा से परे
आमूल क्रांति की आवश्यकता
अंतिम वार्ताएं
शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य
शिक्षा संवाद
स्कूलों के नाम पत्र
सुखी वही जो कुछ भी नहीं
जीवन भाष्य
ईश्वर क्या है?
आपको अपने जीवन में क्या करना है?
ध्यान
जीवन और मृत्यु
ये रिश्ते क्या हैं?
शिक्षा क्या है?
सोच क्या है?
आजादी की खोज
प्रेम क्या है? अकेलापन क्या है?

**जे. कृष्णमूर्ति परिसंवाद (हिंदी त्रैमासिक पत्रिका)
स्वयं से संवाद (निःशुल्क हिंदी न्यूज़लैटर)**

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें :

द कृष्णमूर्ति सेंटर

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया

राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001

ईमेल : kcentrevns@gmail.com

फोन : 0542-2441289

www.j-krishnamurti.org www.jkrishnamurtionline.org

www.kfionline.org www.jkrishnamurti.org

‘कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया’ के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. पी. कृष्णा द्वारा सत्तनाम प्रिंटिंग प्रेस, एस-1/208 के-1, नयी बस्ती, पांडेयपुर, वाराणसी 221 002 से मुद्रित एवं कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक : चैतन्य नागर